Kavyasagar.com

“ आजादी और देश प्रेम विशेषांक “

संकलन-कर्ता : प्रताप सिंह नेगी

kavyasagar.com

स्वतंत्रता दिवस विशेषांक में प्राप्त रचनाओं में आसी युसुफपुरी (सरफ़राज़ अहमद) की ग़ज़ल ‘ कौमी तराना ‘ को सर्व श्रेष्ठ रचना घोषित किया है ।

सर्वश्रेष्ठ रचनाकार का एक काव्य संग्रह अथवा ग़ज़ल संग्रह ebook के रूपों में वेबसाइट पर प्रकाशित किया जायेगा ।

परिवार की ओर से आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभ कामनाएं

सम्पादकीय

kavyasagar.com परिवार की ओर से आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभ कामनाएं

स्वतंत्रता दिवस पर वेबसाइट प्रबंधन समिति की ओर से आयोजित विशेषांक में रचनाकारों की सहभागिता आशातीत रही , इसके लिए आप सभी का बहुत बहुत आभार । प्राप्त रचनाओं में से हम कुछ चुनिन्दा रचनाओं का एक साझा संकलन आपके समक्ष प्रस्तुत करने जा रहे हैं । आशा है आपको पसंद आएगा ।

मित्रों हम सभी के लिए ये एक हर्ष की बात है कि हमारी website साहित्यकारों रचनाकारों के विकास और सम्मान के लिए प्रतिबद्ध है । इसी दिशा में सभी नए और पुराने रचनाकारों की रचनाएँ प्रतिदिन website पर प्रकाशित कर उनकी भावनाओं को साहित्य प्रेमी पाठकों तक पहुचाया जाता है।

साहित्य साधना की दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए www.kavyasagar.com साहित्यकारों के संग्रह प्रकाशन को न्यूनतम लगत मात्र में E book का प्रकाशन अपनी वेबसाइट पर करने का निर्णय लिया है ।

इसी क्रम में website पर कहानी संग्रह , काव्य संग्रह , ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित किया जाना प्रस्तावित है।

रचानाकरारों और पाठकों का सहयोग सादर अपेक्षित है ।

साझा संकलन पर आपके विचार प्रतीक्षित रहेंगे

प्रबन्ध समिति ,
www.kavyasagar.com

`

Aasee Yusufpuri

क़ौमी तराना

जियेंगे वतन में मरेंगे वतन में
हैं बुलबुल रहेंगे सदा इस चमन में

ये हिन्दोस्तां है हमें जाँ से प्यारा
हमें दफ़्न करना तिरंगे कफ़न में

चराग़े तआस्सुब किया किसने रोशन
ज़हर किस ने आख़िर मिलाया किरन में

कहाँ से उठी है घटा नफ़रतों की
घुटन हो रही है दयारे फ़ेतन में

अगर वक़्त आया फिर अपने लहू से
जलायेंगे शम्मे- वफ़ा अंजुमन में

संवर जाये या रब चमन ये हमारा
अता हो फिर ऐसी हरारत बदन में

जो खुशबू थी "आसी" शहीदों के खूँ में
मिलेगी वह निकहत कहाँ यासमन में

Anil Shukla

हम फिर से भारत को दुनिया की शान बनायेंगे

सपना पूरा करके रहेंगे, हमने है ये ठाना।
इस मिट्टी पर जन्मे इसकी खातिर है मिट जाना।

बापू के सपनों जैसा हिन्दुस्तान बनायेंगे।
हम फिर से भारत को दुनिया की शान बनायेंगे।।

इसी धरा पर जन्म लिये श्री विष्णु स्वयं विधाता हैं।
यही पे जन्मी सीता, सावित्री, अनसुइया माता हैं।।
यहां पे जन्मे गौतम बुद्ध, गुरूनानक, महावीर स्वामी।
जिनके बताये राहों की सारी दुनिया है अनुगामी।।

ऐसी धरा को हम उसका स्थान दिलायेंगे।
हम फिर से भारत को दुनिया की शान बनायेंगे।।

यही पर हुए कर्ण और नृप हरिशचन्द्र जैसे दानी।
रामानुजम्, विवेकानन्द, गांधी, नेहरू जैसे ज्ञानी।।
सम्पूर्ण जगत ही जिनके आगे नतमस्तक हो जाता था ।
यूं ही नही ये देश हमारा विश्वगुरू कहलाता था ।।

इस गुरू को हम फिर से इसका सम्मान दिलायेंगे।
हम फिर से भारत को दुनिया की शान बनायेंगे।।

सागर जिसके चरण चूमता, पर्वत ताज सजाता है ।
गंगा मे स्नान करो तो पाप सभी कट जाता है ।।
जन्नत की हमको चाह नहीं जन्नत अपना कश्मीर है ।
ऐसी धरा पे हम जन्मे हैं धन्य अपनी तकदीर है ।।

सोने की चिड़िया को उसकी पहचान दिलायेंगे।
हम फिर से भारत को दुनिया की शान बनायेंगे।।

Ajeet Srivastav

बलिदान चलो हम आज मरते है
हमें भी याद रख लेना
हमारे बाद ये धरती
सदा आबाद रख लेना
बहुत महफूज रक्खा है
वतन के पाख दामन को
सदा ही साफ़ दामन को
हमारे बाद रख लेना
चलो हम आज मरते है
हमें भी याद रख लेना

पड़ी जब भी जरुरत तो
लहू के खुद से सीचा है
हुए घायल मगर फिर भी
कदम पीछे न खींचा है
कभी कुर्बान होने से
यूं हमको खौफ ना आया
हमारी इस शहादत से
वतन का शीष ऊचा है
हमारी ये सहादत यूं
कभी बेकार ना जाये
हमारे बाद भी ये सरजमी
आजाद रख लेना
चलो हम आज मरते है
हमें भी याद रख लेना ||
जवानी है अगर आई
तो यूं बरबाद मत करना

लहू गर ये बहे तो खुद को यूं
नाशाद (उत्साह-हीन) ना करना
अरे ये सरफ़रोशी है
जो बुजदिल कर नहीं सकते
अगर मौका मिले तो रहम की
फरियाद मत करना
कभी जब भी जरुरत तुमको
फिर यूँ हौंसले की हो
जमी को चूम लेना तुम
तिरंगा साथ रख लेना
चलो हम आज मरते है
हमें भी याद रख लेना ||
वतन का प्यार दिल में है
जुदा जो हो नहीं सकता
बहुत है कर्ज मिट्टी का
अदा जो हो हो नहीं सकता
सुनो भारत के जंगी हो
लहू में आग रख लो तुम
अरे तुम हो नहीं कायर
फ़िदा जो हो नहीं सकता
तुम्हारे मरने पर ये
हिन्द की आवाम रो देगी
सुनो मरते हुए तुम हिन्द
जिंदाबाद रख लेना
चलो हम आज मरते है
हमें फिर याद रख लेना

Anil Ayaan Srivastava

कहने को हम आजाद हैं यहां.
पर कितने ही बरबाद हैं यहां.
अपनी ढ़पली अपना राग है.
सब बहुत बडे उस्ताद हैं यहां.
शांतिसेवको में फैली अशांति.
होते रोज नये फसाद हैं यहां.
ज़िंदगी कैसे भी शेर सुनाये.
सभी कहते इरशाद हैं यहां.
गालियां है राजनैतिक गहना
यही सत्ता का उन्माद है यहां.
खून का दरिया बहा रहे सब.
तबभी देश जिंदाबाद है यहां.
जुर्म और जुल्म की हवा चली.
इशा जिंदा औ आबाद है यहां.

Alpana Harsh

"आजादी "

****

एक दिन
पूछा मुझसे
किसी ने
कितनी आजाद हो
तुम इस आजाद देश मे
क्या बताती उसे
जब मुझे
आजादी के मायने ही
नहीं पता
क्या होती है
आजादी
मै इस आजाद देश मे
रह कर भी
जान नहीं पाई
बस खुश हो लेती हूँ
अपने होने के
अहसास से

इस आजाद देश में
क्या बेटी का कोख से
सही सलामत
पैदा हो जाना भी
बडी़ आजादी नहीं है
हम महिलाओं के लिये
तो हाँ मै खुश हूँ
आजाद हो कर
अनदेखी बैड़ियों से
बस थोडी मुक्ति और
मिल जाये फिर
मैं भी मनाऊंगी
आजादी का जश्न।

Bharat Raj

स्वतंत्रता

मैं भारत की माटी कि खुश्बू बिखराने वाला हूँ
मैं आजादी की गाथा को पल में गाने वाला हूँ

गाँधी जी को हमने पूजा
और टैगोर को गाया है
कोहिनूर को खोया हमने
आज़ादी को पाया है
भगतसिंह का रक्त कीमती मैं समझाने वाला हूँ
मैं आजादी की गाथा को पल में गाने वाला हूँ

काश्मीर की घाटी का वो
चेहरा कैसे निखरा था
भूल न जाना बर्फगिरि में
रक्त यहां का बिखरा था
शीतलजल के चार तमंचे को धमकाने वाला हूँ
मैं आजादी की गाथा को पल में गाने वाला हूँ

जलियावाले बाग में जाना
बोले वहां की गोलियां
सिंघ्ह सरीखे लोग मरे थे
और वहां की टोलियां
मैं भारत के आँसू की वो याद दिलाने वाला हूँ
मैं आजादी की गाथा को पल में गाने वाला हूँ

BrijPal Singh Rawat

"आज़ादी और देश प्रेम विशेषाक"

_____

आज़ादी कहीं खोई
नहीं थी जो मिल गई,
आज़ादी दिलवाई है
उन शहादतो नें उन बलिवानों नें
कुर्बान हुए जो इस
वतन के लिए इस चमन के लिए,
भला क्यों कहते हो तुम
कि आज़ादी मिल गई
क्या-क्या यातनाएं झेली
क्या-क्या क्रुरता झेली,
अरे ! तुम क्या जानों मियाँ बाबू
ये कोई चीज़ नहीं
जो खो जाए और फ़िर मिल जाए,
क्या ज़द्दोजहद की उन्होंने
क्या-क्या पीडा सही,
क्या-क्या दर्द सहा
मेरे ख्याल से ये सब कम है
जो भी हम करते हैं
आज शहादतो के लिए
नमन करते हैं
चरणोस्पर्श करते हैं

ये भी कम ही है,
और जानता हूँ मैं
अगर होता कोई
बीर उनमे से ज़िंदा यहाँ,
तो भला करते क्या
करते तुम उसके लिए
बस ऐसे ही दो दिन याद करते
फिर कौन था बीर?
क्या? क्यों? ये सब
हा अगर लगाव है दिल से
हरेक सुख में याद करो इन्हें
मैं मानता हूँ कम ही
होगा सब यह भी,
मगर ऐसा न कहो
कि मिली है आज़ादी
आज़ादी तो दिलवाई है हमें
उन शहादतो नें उन बलवानों नें

Dharambir Dhull

आजादी

आओ बच्चो तुम्हे सुनाएं
आजाद भारत की कहानी

कहानी आजादी की
अलबेलो की मस्तानों की
लडते हुए मर्दानो की
शहीदों की, परवानों की
रक्त से नहाए जवानो की
चलो,वो गाथा फिर से दोहराए जुबानी
आओ ...

किसानो की ,मजदूरो की
वीरो की ,योद्धाओं की
पुरूषों की ,महिलाओं की
कर्मियों की,उद्योगों की
सैनिको की,नौसैनिकों की
सुनाएं वो बगावत की कहानी
आओ...

बापू का सत्याग्रह हथियार बन गया
नेताओ का आग्रह औजार बन गया
आंदोलनो का एक सफर बन गया
आजादी का ज्वर बन गया
क्रान्तिकारियों की डगर चल पडी
अग्रेंजो की हकुमत पर हिल पडी
अग्रेजी अत्याचार की सुनो आज कहानी
आओ...

भगत राजगुरू सुखदेख का भाव देखो
बोस का नया अंदाज देखो
पंजाब बंगाल से उठी चिंगारियां
दक्षिण से आए नर नारियां
द्रविड कन्नड मलयालम
उडिया तेलगु भारत नाटयम
सर्व भाषा उमड पडी मस्तानी
आओ...

वंदे मातरम के नारे गुंज रहे
कंही दुआ रहमन की,
कंही राम राम जप रहे
पीडा जलियांवाले बाग की
कंही खंजर हाथों मे उठ रहे
बाल गोपाल भरी जवानी
वृद्धजन बने महान सेनानी
याद करो उनकी आज कुर्बानी
आओ .....

गंगा जमना ब्रह्म से निकल पडी
मसाल ले हाथों मे जवान टोंलियां
पहाडी दलदली मरू भूमि बिखर पडी
देने को कुर्बानियां
दक्षिण से गूंज उठी धरा पठारी
पुरा संस्कृति की उठा,पहेलियां
सुनो आज उस महासग्रांम की ध्वनि
आओ.....

Devendra Pandey Jagan

ऐ मेरे देश

ऐ मेरे देश
तू किसी मासूम बच्चे की सादगी है
किसी सुन्दर नारी की मुस्कान है तू
तरसता हुआ मेरा प्यार
बन्दी की आजादी का अरमान है तू

ऐ मेरे देश
तू मेरे आकाश की धरती है
मेरे सूरज की राेशनी का आँचल है तू
तू चाँदी की स्वच्छ थाली है
चाँदनी की किरणाेंं का बिस्तर है तू

ऐ मेरे देश
तू किसी नारी के घूँघट की साज है
किसी बच्चे के उज्वल मुख सा पवित्र है
तू एक माँ का स्नेह
नवयुगल के प्यार सा मिश्र है तू

ऐ मेरे देश
मैं खुद आैर मेरा सर्वस्व तुम्हारा है
खून की हर बूँद तेरी कर्जदार है
जाेश भरा दिल ये मेरा
कर्ज अदायगी के लिए बेकरार है

Hemant Kumar Keern

"आजादी व देशप्रेम विशेषांक गजल"
जन गण की बरबादी छोड़ो।
तन से कुर्ता खादी छोड़ो।।
सत्ता है जागीर नहीं ये
क़ैद हुई आज़ादी छोड़ो।।
भूखे नंगे की भी सुधि ले
ढोंग बने न मुनादी छोड़ो।।
घूँघट को ही आड़ बनाकर
क्यों आधी आबादी छोड़ो?
असली आज़ादी का मतलब
द्वार खड़े फ़रियादी छोड़ो।।
मुठ्ठी भर लोगों को लेकर
सोच बनी मनुवादी छोड़ो।।

Indra Dev Bharti

कलम कसम है

""""""""""""""""""""""""""""""

सीमाओं के रखवालों को
भारत का अभिमान लिखो ।
कलम कसम है इन वीरों के
अभिनन्दन के गान लिखो ।।

जाग रहे जो सीमा पर, कि
चैन हमारा उजड़े ना ।
और नज़र से देश का दुश्मन
बच कर कोई गुजरे ना ।
वीर सपूती माँ के ऐसे
बेटों के गुणगान लिखो ।।
कलम कसम है............. ।।

सुबह,दुपैहरी,शाम,रात क्या
सर्दी, गर्मी, बरसातें ।
भूखे - प्यासे झेल रहे जो,
घातक घातों की घातें ।
डूब के सोने की स्याही में,
तुम इनके बलिदान लिखो ।।
कलम कसम है............. ।।

दिल की रानी,ज़िगर के टुकड़े,
बहिना, माँ, बापू प्यारे ।
इनको खारे आँसू देकर,
ये सब जीते - जी मारे ।
ऐसे घर को तीरथ लिक्खो,
बस्ती हिंदुस्तान लिखो ।।
कलम कसम है............... ।।

अधरों पर मुस्कान थी जिनके,
ज्वाला जिनके सीने में ।
कहते बिन गोली, रोली के,
क्या रक्खा है जीने में ।
ओढ़ तिरंगा लौटे उनका-
गौरव, गर्व, गुमान लिखो ।।
कलम कसम है.............. ।।

Jyoti Mishra

आजादी और देश प्रेम

हैं रंजिशें भी कम नहीं
कैसे मैं कह दूँ, गम नहीं
लड़ते -झगड़ते हम सौ दफा
पर ये न कहो मरहम नहीं ...!

छठ में सूप, डाले साथ हैं
वो मुस्लिमों के हाथ हैं,
जूते जो पहने पांव में
छाले न हमको घाव दें ,
किये बुनकरों ने बड़े जतन
कपड़े से सजते हैं बदन ...!

गुरूद्वारे हों या मंदिर, मस्जिदें
झुके शीश, सबने किए हैं सजदे,
अजमेर हो या फिर अमृतसर
चढाए चादरें, झुके हमारे सर !

हर कौम में काफिर चंद हैं,
हिन्दू में भी जयचंद हैं
छोड़ नफरतों के रास्ते
हम जियें वतन के वास्ते ...!

हर घर कलामसा पाक हो
जो गर इरादा साफ हो,
इंसानियत हो बस इंसाफ हो
हुई गलतियां तो माफ हो. . !

हम सबका ये प्यारा वतन
सारे जहां से न्यारा वतन
अपना तिरंगा शान है,
गीता यही, ये कुरान है
हमसबकी ये पहचान है
धड़कन यही, ये जान है
हम सबका हिन्दुस्तानहै .....
बोले हमारे मुखारविंद
जय हिन्द ! जय हिन्द !!!

Jawahar Lal Singh

‘मेरे सपनों का भारत’!

मेरे सपनों के भारत में, कोई न भूखा नंगा होगा.
हर लड़का लड़की के हाथ में, ऊंचा सदा तिरंगा होगा!
कोई न होगा गोरा काला, कोई न नाटा ठिंगना होगा
फूलों की खुशबू से सुरभित, अपना प्यारा अंगना होगा!
न कोई नेता न कोई क्रेता, मिलजुल कर सब काम करें
मिलकर रोटी दूध मलाई, भोजन शुबहो शाम करें.
मंदिर जाय मुस्लिम मुल्ला, राम नाम का पाठ करे
मस्जिद जाकर हिन्दू पंडित, अल्ला का भी जाप करे!
गिरिजाघर, गुरुद्वारा शोभे, एक दूसरे के सम्मुख.
मालिक सबका एक ‘वही’ है, समझें हर कोई का दुःख
दीवाली में दिए जलाएं, ईद में सब जन मिले गले.
क्रिसमस में गिरिजाघर जाकर, भूले शिकवे और गिले!
राष्ट्र की भाषा एक हो अपनी, सीखें अन्य कोई भाषा
सीमा में ना बंधे कोई भी, पंजाबी बोले, बंग भाषा
आम आदमी बनकर देखे, उच्च सिंहासन का सपना
ऊंचे पद का मालिक समझे, हर कोई को ही अपना.
ऐसा भारत स्वर्ग बनेगा, नहीं चाहिए अब जन्नत.
मालिक सबका एक तुम्ही हो, पूरी कर दो यह मन्नत!
मेरे मौला राम तुम्ही हो, गुर नानक साईं बाबा.
जन्नत धरती स्वर्ग यही सब, क्या करना जाकर काबा!
धान, ज्वार, गेहूं की फसलें, देख जिया सबका हरषे
गैया, भैंसी, भेड़, बकरियां, चीता और हिरण हरषे
बादल देख मोर नाचते, पपीहा पिया पुकारे क्यों?
साजन संग मिले सजनी, फिर गीत विरह के गाये क्यों!
चोरी कोई नहीं करेगा, थाने पुलिस का न कोई काम,
दिन में मिहनत सभी करेंगे, रात करेंगे पूर्ण आराम!
दिव्य रोशनी पुलकित यामिनी, चंदा मामा देखेंगे
सूरज की किरणों से रोशन, नया सवेरा देखेंगे!
नहीं चाहिए मनमोहन, न मोदी का सुन्दर सपना!
ब्लोगर कवि सब मुदित मनोहर, सोहेगा अपना अंगना!
भारत माता ग्राम वासिनी, गांवों में खग कूजेंगे
वृद्धों को उनके कुटुंब जन, देवों के संग पूजेंगे!
मेरे जैसे सपने देखें, मेरे सब संगी साथी.
बुरे वक्त में साथ निभाए, न होगा कोई घाती!
ऐसा मैंने सपना देखा, मित्र मेरे सब आन मिले
हर्ष के आंसू निकले दृग से, जब हम सब आ मिले
गले!...

Kshitij Bhawane

आजादी है..
आजादी है,आजादी है,आजादी है।
आजादी की आग सुलग रही है साँसों मे,
शहादत के नगमें गूँज रहे हैं कानों में,
इंकलाब के नारे दौड़ रहे है इन हवाओं में,
आजादी है,आजादी है,आजादी है।

हिम्मत के शोले जल रहे है सुबहों में,
लहू की बूँदों से फसलें खिल उठीं है खेतों में,
जीने की आशा की डोरी बंधी है हाथों हाथों में,
आजादी है,आजादी है,आजादी है।

आजादी की किरणें फैल रहीं हैं आँगन आँगन में,
प्रताप,शिवाजी,गांधी ने एक जन्म लिया हैं सदियों में,
आज़ादी की खुशबू फैला रहा है तिरंगा गांवों-शहरों में,
आज़ादी है,आज़ादी है, आज़ादी है।

Dr.krishna Kant Dubey

'संकल्प ले लो'

हाथों में पत्थर नहीं, तिरंगा ले लो
वतन के लिए जीने का सकल्प ले लो |

हाथों में हथियार नहीं,फूलों का गुलदस्ता ले लो
इंसानियत के लिए कुछ करने का संकल्प ले लो|

कोई कितना भी बहकाये तुम्हें यारों
अपने ओठों पर वंदे मातरम् का उदघोष ले लो|

माना कि आग बहुत है दिलों में
सरहद के दुश्मन को जलाने का संकल्प ले लो|

बारुद के बिछौंने पर सोने वालो
फूलों की सेज बनाने का संकल्प ले लो |

ये देश तुम्हारा, तुम देश के हो यारों
देश के लिए जान न्यौछावर करने का संकल्प ले लो|

मातृ भूमि के लिए निकले प्राण
हाथों में तिरंगा,तन पर हो तिरंगा बस यही ख्वाब ले लो|

Kishor Chhipeshwar"sagar"

मेरा ये अरमान.....

ये लहराता तिरंगा
मेरे वतन की
शान रहे
मर मिट जाऊ
मै अपने वतन के लिए
गम नहीं
मेरा बदन रहे
तिरंगे से लिपटा हुआ
मरते दम तक
मेरा ये अरमान रहे"

Kavita Singh

हमारा प्यारा देश महान
जहाँ से न्यारा हिंदुस्तान
यहाँ बहती गंगा की धार
हिमालय इसका पहरेदार
यहाँ झरते झरनों का गीत
झूमती आई मलय बयार
यही तो है भारत की शान
हमारा प्यारा .....
हिम आच्छादित पर्वत माला
मन को भाती जैसे हाला
सूर्य स्पर्श करे जब उसको
लगती ज्यों मुग्धा सी बाला
देश पर हमको है अभिमान
हमारा प्यारा .....
यहाँ के सागर बड़े विशाल
लीलते बने शत्रु को काल
यहाँ कश्मीर सरीखा स्वर्ग
सजा बिन्दी सा भारत भाल
हमारा देश हमारा मान
हमारा प्यारा देश महान

Kishor Singh

जय हिंद जय भारत माँ

याद करो उनकी कुरबानी
जो हँस कर फांसी झूल गये
आजादी के धुन पर अपना
घर अंगना सब भूल गये
याद करो,,, मिलकर याद करो ,,,

याद करो उस आजादी को
जिस में बहे लहू के धारे
टूट गये माँ के आंचल से
कितने ही आंखों के तारे
याद करो,,, मिलकर याद करो ,,,

याद करो आजाद भगत
नेता जी ने क्या ठानी थी
याद करो झासीं की रानी
खूब लड़ी मर्दानी थी
याद करो,,, मिलकर याद करो ,,,

याद करो मंगल का सीना
किस कदर फौलादि था
प्राण से प्यारा वतन प्रेम था
रग रग में आजादी थी
याद करो,,, मिलकर याद करो ,,,

याद करो कतरा कतरा
जो लहू बतन के नाम हुआ
आजादी के ख़ातिर बोस
सब कुछ दे गुम नाम हुआ
याद करो,,, मिलकर याद करो ,,,

याद करो भारत फिर से
उस आजादी के मेले में
मिट गये कितने सुहाग
चुडीयां टूट गई उस रेले में
याद करो,,, मिलकर याद करो ,,,

कितने बालक यतीम हुए
कितनों का बुढापा सीहर उठा
चारों तरफ था मौत का मंजर
हर नज़र में आंसू भर उठा
याद करो,,, मिलकर याद करो ,,,

बर्बरता की हदें लाघं कर
जुर्म फिरंगि करते थे
लाल बीर थे भारत माँ के
कब मरने से डरते थे
याद करो,,, मिलकर याद करो ,,,

हमारा हिन्दुस्तान,प्यारा हिन्दुस्तान
देश के खातिर हो जरुरत,हो जायें कुर्बान
हमारा हिन्दुस्तान,प्यारा हिन्दुस्तान.....

मूल्ला-पंडित की छोड़ें बातें,मन से आज ये कसमें खा
अब ना दूरी और बढ़ाओं, आओं आज गले लग जा
भूल के हर शिकवा बढ़ा दे ,देश की अपनी शान
हमारा हिन्दुस्तान,प्यारा हिन्दुस्तान.....

गैर नहीं है सब है एक,आपस में हैं भाई-भाई
हिन्दू-मुस्लिम सब है एक चाहे सिख या हो ईसाई
रोकेगें हर भेद भाव ,चाहे देना पड़े बलिदान
हमारा हिन्दुस्तान,प्यारा हिन्दुस्तान.....

हम सब एक रहेंगे जब तक डर नहीं किसी वात का
हिमालय रक्षा करता है दिन हो चाहे रात का
बुजुर्गो की शान यही है, है अपना अभिमान
हमारा हिन्दुस्तान,प्यारा हिन्दुस्तान.....

लाख पड़ोसी सर पटकले कुछ नहीं होने वाला है
देश के खातिर समझो अब तो जन–जन हुआ दीवाना है
“लाल” का जितना दाम लगा ले, बेंचे नहीं ईमान।
हमारा हिन्दुस्तान,प्यारा हिन्दुस्तान.....

Meharu Pandit Pyasa

ये आजादी,हमको बिल्कुल, रास नहीं।
दम घुटता है,खुलकर आती,साँस नहीं।
अंग्रेज गये,पर अंग्रेजी, बाकी है।
नियम व शर्तें, तो सारे ही,बाकी हैं।

अंग्रेजों के,द्वारा कैसे,छले गये।
अपने सारे,रिश्ते नाते चले गये।
मात पिता को,मम्मी डैडी,कहते हैं।
रिश्ते बनके,अंकल आंटी,रहते हैं।

गला घोंट कर,हिंदी भाषा,का जानों।
अंग्रेजी को,थोंप गये हैं,यह मानों।
अंग्रेजी तो,अंग्रेजों की,होती है।
हिंदी भाषा,हिंदी जन को,रोती है।

सभ्यता और,संस्कृति सारी,तोड़ गये।
भारत लूटा ,पर इंडिया को, छोड़ गये।
इन बातों ने,मेरे मन को,मोड़ दिया।
क्या गोरों ने सचमुच भारत छोड़ दिया।

कोई भारत, माँ को डायन, कहता है।
भारत से कर,के गद्दारी, रहता है।
अपने लोगों, से भी भारत,हारा है।
भारत के टुकड़े,करने का, नारा है।

हमने ही तो,पाला इनको,लाड़ो से।
रहे थूकते,संविधान की,आडों से।
ये आजादी,भी कैसी है,आजादी।
अपनों के ही,हाथों होती, बरबादी

सबक सिखाओ,गद्दारों को,सजा मिले।
इनको अपनी,करनी का अब,मजा मिले।
पूँछ दबाकर,फिर सब कायर,भागेंगे
पता नहीं कब,भारत वासी,जागेंगे।

राष्ट्र द्रोहियों,को मिलकर अब, खत्म करो।
भारत माता,को ऐसे तुम,नमन करो।
तभी मिलेगी, इस भारत को,आजादी
खुशी खुशी से,रह पाएगी,आबादी।

Mohit Jagetiya

हम ऐसा देश बनायेंगे ।
वैसा परिवेश लायेंगे

सभी को खुशियों की दौलत मिले ।
प्रेम वर्षा की मोहब्बत मिले।

सबको मिले यहाँ अधिकार ।
सबको मिले यहाँ पर प्यार ।

हम एक दूजे के काम आये ।
शांति का हम तो पैगाम लाये ।

हम ऐसा देश बनायेंगे ।
वैसा परिवेश लायेंगे ।

ये देश हमारी शान है ।
ये देश हमारा मान है ।

जियेंगे हम देश के लिए।
मरेंगे हम देश के लिए

Neeloo Neelpari

तिरंगा

तिरंगा मेरा करे फ़रियाद
न बांधों धर्म के प्राचीरों में
कर दो अब मुझको आज़ाद

केसरिया मेरा ओढ़ रहे हिन्दू
मुस्लिम पहने दिखते हरा
शान्ति, प्रेम, सद्भाव का
श्वेत है रंग, क्यूँ भूल गए हम भला
अशोक की नीली तीलियाँ जोड़कर
चौबीसों घंटे चलो मिल निरंतर
तिरंगा मेरा . . . .
दुश्मन रोक न सके मेरे वतन के
बढ़ते क़दमों की अब रफ़्तार
स्वाभिमान मेरा है आज़ादी
जन जन का अधिकार आज़ादी
गौरव न कम होने पाये
शहीदों के बलिदान का
नमन करें आजादी के मूक रक्षकों
शहीदों की माँ, बहन व बेटियों को
बढ़ते चलो गंगा, यमुना की रफ़्तार से
देश के गुणी वैज्ञानिकों के पूरे सत्कार से
भूमंडलीकृत हों, पर न भूलें किसान के त्याग को
देश का अन्न, देश का कपड़ा, देश की ही तकनीक हो
तिरंगा मेरा ...

खा लें आज कसम, तोड़ें भेदभाव की हर दीवार हम
जात-पात, लिंग-वर्ग भेद की तोड़ दें प्राचीर अब
ए हिन्दुस्तानवासियों छू लो अब आकाश तुम
जीत लो हर बाज़ी, पा लो नित नए आयाम तुम
वक़्त की है यही पुकार, वक़्त की समझो पुकार तुम
तिरंगा मेरा ...

Om Pal Saharma

आसान लगता है

मुझे करना जहाँ में सब,बड़ा आसान लगता है |
मुझे ये देश मेरा अब,मुझे मेरी जान लगता है ||

लूटा दूँ प्राण अपने कब,लवों को खोलकर बोलो |
निराला देश दुनिया में , हिन्दुस्तान लगता है ||

वतन को राह पर लाना,हमारा काम बन जाता |
लुटाना प्राण हँसकर के मुझे तो शान लगता है ||

यहाँ कुछ लोग ऐसे है,बिकें जो चंद सिक्को पे |
कहूँ सच में सभी का ही,गिरा ईमान लगता है ||

मुहब्बत काम इंशानी ,उसे ही भूल बैठा वो |
उगाकर पेड़ नफ़रत के ,बताने पान लगता है ||

सुनो ऐ ओम भू पर हम, चमन फिर से उगा लेंगे |
करेगा रब सभी पर ही मुझे अहसान लगता है ||

Dr Pratibha Prakash

आओ याद करें

आओ याद करें हम फिर से
किये गए उन बलिदानों को
हंसते हंसते झूल गए जो
आज़ादी के दीवानों को
सुखदेव,भगत औ राजगुरु
विपिन दा से परवानों को
ऊधम, चन्द्रशेखर ,विस्मिल
औ काकोरी के मस्तानों को
लाहिरी,रौशन,अशफ़ाक़ उल्ला
इंकलाब के गूंजे जयकारों को
पेड़ो पे लटके अनजान शहीदों
दुर्गा भाभी जैसी माँ को
तुम खून दो मैं आज़ादी दूँगा
सुभाष चन्द्र के सुर वाणों को
स्वराज्य जन्मसिद्ध अधिकार है
तिलक,गोखले ऊँचे नारों को
मेरठ गदर से शुरू हुआ जो
मंगल पाण्डे से जांबाजों को
लक्ष्मीबाई,नाना औ तांत्या

टीपू की तोपों तलवारों को
सत्याग्रह से भारत छोडो
गांधी जी के आंदोलन को
उन वीर शहीदों को करें नमन
सीमा प्रहरी रखवालों को
माँ की सूनी हुई गोदों को
तकती राखी की सूनी राहें
सिंदूर से उजड़ी मांगों को
दुधमुंहे नन्हे राजा की देती
मुखाग्नि अबोध निगाहों को

वन्देमातरम

मैंभारत

Pratik Palor

उगतेसूरजकीगवाहीमें, गगनहुआहैकेसरिया...
हरीभरीहैधरतीनीचे, भास्करकाअभिषेकहुआ...
मैंप्रतीकइसचक्रकी, हरदिशाऔरवेगका...
देखोमेराउजलामस्तक, सफ़ेदरंगमध्यका...

स्तम्भअटलआधारअचलहूँ, डोरमेरेकान्हाकेहाथ...
उद्घाटनवोमेराकरदे, गौरवलहराएदेशका...
इसधरतीकीउनवीरोंकी, माँसेगाथाएँसुनताहूँ...
इसजन्मभूमिकीसेवाके, मैं अवसरअक्सरचुनताहूँ...

मैंश्रावकहूँमैंशावकभी, मैंशीतलजलमैंपावकभी...
गायकहूँप्रेमकेछन्दोंका, नारीकेसतकापालकभी....
मैंशांतधीरअतिवीरप्रबल, अक्षयअतुलनम्रशील...
अपनीमाँकाजायाहूँमैं, बेटाभारतवर्षका...

वैभवऔरविज्ञानकास्वामी, वीर, वेदपाठी,गुणी...
मातृतुल्यहैजन्मभूमि, हूँपुत्रधराकासदाऋणी...
राष्ट्रप्रेमकेनितउद्बोधन, प्रचारकरताहूँदैनिक...
अस्त्रशस्त्रनाकवचढाल, मैं शब्दलेखनीकासैनिक...

हूँदयादानकाप्रेरकभी, प्रेषकमैं शान्तिसंदेशोंका...
रक्षकहूँहरितआवरणकामैं, गंगाधरकेकेशोंका...
गुरुवाणीसेकुर्बानीतक, मरूरेतीसेसरुपानीतक...
मैंदेशप्रेमसेओत-प्रोत, मैंमानवताकीसजगजोत...

पौरुषकाप्रमाणमैंहूँ, श्रीकृष्णकोप्रणाममैंअर्जुनका...
परम्पराओंकाप्रयागमैं, आदिमेंअधुनातनयुगका...
मैंसम्बलहूँमैंसौष्ठवहूँ, मैंआत्मबलस्वाभिमानमैं...
युगप्रणेतांविश्वविजेता, मैंनागरिकहूँभारतका...

Rajveer Singh

शहीदों की अमर कहानी

आन-बान की रक्षा खातिर दे दी अपनी कर्बानी |
याद करो सब हिंदवासी शहीदों की अमर कहानी ||
कितने ही फाँसी पर झूले
कितनो ने गोलियाँ खाई थी
उनके लहू से सींचित होकर
मुक्ति-फसल लहलहाई थी |
गुलाम भारत के चेहरे पर आई थी नई रवानी ||
नंगे पाँव चले शोलों पर
असिधारों पर लेटे थे
कदम उनके न डगमगाए
वे हिंद के सच्चे बेटे थे
करते पूर्ण प्रतिज्ञा वे जो भी मन में ठानी ||
देख दुर्दशा भारत माँ की
खून उनका ही खोला था
जयहिन्द और वन्दे मातरम
बच्चा बच्चा बोला था
जंजीरे गुलामी की काट चले झेली हल परेशानी ||
इस लेखनी में वो दम कहाँ
उनकी गौरव गाथा लिख पाए
चुपके-चुपके स्याही के संग
अविरल अश्रु बह जाए
हाय ! त्याग उनका भुला दिया ये कैसी नादानी |
याद करो सब हिंदवासी शहीदों की अमर कहानी ||

Ramesh Sharma

आजादी को हो गए,.आज उनहत्तर साल !
नहीं गुलामी का मगर,कटा ज़हन से जाल !!

आजादी का कब हुआ,हमें पूर्ण अहसास !
पहले गोरों के रहे ,...अब अपनों के दास !!

जिसको देखो बेधड़क, लूट रहा है देश !
आजादी के अर्थ को, समझे नहीं रमेश !!

आजादी के बाद से, दिन-दिन भड़की आग !
साल उनहत्तर बाद भी, नहीं सके हम जाग !!

भूखे को रोटी नहीं,रहने को न मकान !
हुआ देश आजाद ये,कैसे लूँ मै मान! !

आज़ादी को हो गये,आज उनहत्तर साल !!
नेता तो खुशहाल हैं,पर जनता बदहाल!

आजादी अब हो गई, है ऐसा हथियार !
अपनों के आगे करे, अपनों को लाचार !!

Rahul Vyas

देश प्रेम

सो जाएगा जब तू,
होगी तुझपर हरदम थू
तुझे कुछ दिन याद रखेंगे,
फिर तेरी बात रखेंगे,
एक दिन तुझे सब भूल जाएंगे,
और तेरी तस्वीर पर माला चढ़ाएंगे।

तेरा पहला होगा और चौथा भी,
होगा एक दिन तेरा घाटा भी,
बारहवे पर तेरे जग जिमाएंगे,
लगेगा की तेरे मरने पर जश्न मनाएंगे।

तू आएगा और चले जाएगा ,
क्या कर गुज़र जाएगा,
कर कुछ ऐसा की तुझे सब याद रखे,
तेरा नाम लेते ही पलकों पर अश्रु छलके,
सोच एक बार कभी इस हो जाए ,
तू मरे और तू शहीद हो जाए,
आसमां भी रोए और कारवां भी रोए,
तुझे देख तेरी माँ की आँख नम होए,
ये सब तब होगा जब तू देश प्रेम करेगा,
और देश की रक्षा करते करते मरेगा,
सोच क्या मंजर होगा वो,

तुझे तोपो से सलामी दी जाएगी,
आगे पीछे तेरी बात की जाएगी,
तू सोएगा तब सब रोएँगे,
तेरे लिए अपनी आखे भिगोएंगे,
सीने में तेरे गोली होगी ,
शरीर पर होगा तिरंगा कफ़न,
मृत्यु भी अश्रू बहा रही होगी,
मिलेगी जब तुझे अग्नि या दफ़न ।

हर शख्स तेरा नाम लेगा,
तेरी बहादुरी की मिसाल देगा
कहेगा तेरे बारे में,
वो था वीर जिसमे वीर-शक्ति,वीर-भक्ति,वीर-स्वाभिमान था,
जिसने देश हित में सबकुछ औछावर कर दिया,
और मातृभूमि के खातिर प्राण तक न्योछावर कर दिया ।

Suraj Thakur ,

सीखा कभी ना सर झुकाना स्वप्न में भी वो
दुश्मन की सीना चीर दी या शहीद हुआ जो

या वो मौत अपनाया जीया तो देश के खातिर
फिरंगी को भगाया हो भले उसमें कई शातिर

हुए आजाद तब हम उन फिरंगी ओ लुटेरों से
मगर अब बंध गए हैं देश के अंदर सपेरों से

घिनोंनी राजनीति में यहाँ अब रोज मरते हैं
सभी नेता यहाँ के देश को बर्बाद करते हैं

बीते हैं दशक सात यहाँ पर कुछ नहीं बदला
सभी ये सोचते हैं जो करेगा वो खड़ा अगला

इसलिए

देश के गणतंत्र में इक
अध्याय नया लाइए
आरक्षण में अब कहीं
आर्थिक जुड़ना चाहिए

हमको असहिष्णुता का
पाठ मत पढ़ाईए
हो सके तो शांति की
सरिता बहाइए

पैसों की धौंस पर
अब वोट मत बनाइए
राम और रहीम पर
ना जनता को लड़ाइए

आप भी इमाम अपना
फर्ज कुछ निभाइए
वक्त के बदलाव से
अब नजर ना चुराइए

भारत माँ तेरी सुंदरता का सानी नहीं कोई मिलता
तेरे मस्तक पर सजा ताज़ कहीं और नहीं माँ सजता !

S K Gupta

प्रातः सूरज की लालिमा में रूप तेरा ही दमकता
चाँद भी अपनी धवल किरणों से सिंगार तेरा करता !

गंगा यमुना की धारा से तन मन पुलकित रहता है
श्रद्धा ,ममता ,त्याग ,शांति से है तेरा वैभव सजता !

दक्षिण में सागर की लहरें हैं चरण तेरे ही धोती
उत्तर में गिरिराज हिमालय तेरी ही रक्षा करता !

तेरे आँगन में ही जन्मे थे सूर, कबीर और तुलसी
उनकी संस्कृत्यों का उजाला तुझे सुशोभित करता !

रक्षा बंधन ,ईद ,दिवाली ,बैसाखी ,होली ,क्रिसमस
बसंत अंक में लिए मधुमास , तुझे सुवासित करता !

गाँधी ,बोस ,भगत सिंह ,लक्ष्मी बाई की धरती पर
कोई गद्दार आतंक वादी है पाँव नहीं रख सकता !

एक सूत्र में बंधे हैं सब हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
कोई माई का लाल हमे अलग नहीं कर सकता !

छीन सकेगा कोई न तुझ से माँ तेरा यश आधार
माँ तेरे सपूतों के आगे कोई नहीं टिक सकता !

तेरी आँखों में आंसू माँ कभी नहीं आने देंगे हम
माँ शत शत प्रणाम तुझे हर भारत वासी करता !

Sanjay Aksh , Balaghati

पैगाम....
वतन वालो तुमको है ये पैगाम
करो चन्द लम्हे उन वीरो के नाम
उतरे है जो खरे हमारी हसरत पर
बहाया है लहू वतन की सरहद पर
दिल की गहराई से करो उन्हे सलाम
वतन वालो .....!
बिस्मिल अशफाक की सरफरोश बोली
आजाद लाजपत की खून की होली
दो उन यादो को जिंदगानी मे धाम
वतन वालो.....!
वो आजादी के आशिक इंकलाब के रास्ते
चढ गये फासी पर देश प्रेम के वास्ते
छोड वक्त-ए-अश्व की हाथ हमारे लगाम
वतन वालो.....!
उनके ये करम उनकी ये रहमत है
घर पर हम जो आज सलामत है
कायम है उनसे ही अश्क ये शूबह शाम
वतन वालो.....!

Kavi Sushil Rakesh

तिरंगें पर क्षणिकायें

***

विश्व में श्रेष्ठता का
अद्भुत प्रतीक तिरंगा,
अनूठी भारतीय संस्कृति,धर्म
प्रतिबिंम्ब तिरंगा|

***

आत्म सम्मान
आत्म विश्वास की पहचान तिरंगा,
प्रगति, संमृद्धि,ध्येय प्राप्ति का
रंग तिरंगा|

***

तिरंगे की खातिर
अनगिनत वीरों ने लहू बहाया,
देश है सुरक्षित
जय अमर जवान तिरंगा|

****.

तिरंगे से होती है देश की
मुक्कमिल इंसानियत,
लहराता,फहराता
सम्मान का अवदान तिरंगा|

***

जब-जब ऊँचा हुआ
गगनमंडल में तिरंगा,
अभिव्यक्ति की सिवतंत्रता का
आगाज तिरंगा|

Sushila Joshi

मेरा देश महान

मेरा देश महान भैया ! मेरा देश महान

काश्मीर है मुकुट अगर
तो कन्याकुमारी सागर
पश्चिम आशीर्वाद है देता
पूरब राधा नागर
हर पनघट से छड़ती रुनझुन मधुर मुरलिया तान । ।

इसके नदिया झरने देखो
कल कल स्वर में गावे
कनक कामिनी वनस्पति भी
खिल खिल कर इठलावे
हर समीर से सुरभि फूटे बिखरे जान सूजान ।।

इसकी हर नारी सावित्री
हर बाला एक राधा
नूतन अर्चन के छंदों पर
साँस साँस को साधा
प्रेम से पूजते मानव पत्थर बन जाते भगवान ।।

इसकी यौगिक शक्ति को
हर देश विदेश सराहवे
इसकी संस्कृति को तो देखो
झुक झुक सीस नवावे
जन गण मन का भाग्य विधाता गाये तिरंगा गान । ।

रीती रिवाजअलग है इसके
अलग अलग है भाषा
" भारतवासी " कहलाने की
किन्तु एक परिभाषा
मिल जुल कर खेतो में काटती गेहूं मक्का धान ।।

चहल पहल शहरो में इसके
गाँवो में भोलापन
जंगल में नवजीवन इसके
बस्ती में कोलाहल
कण कण में आकर्षण इसके हर मन में एक आन । ।

"घायल की गति घायल जाने
मीरा कहे दीवानी
"लागा दाग़ छुड़ाऊं कैसे "
कहे कबीर की बानी
" मेरो मन कहाँ सुख पावे " सही सूर का बान ।।

Sameer Sahi

राष्ट्र पर्व

आज़ाद गगन आज़ाद पवन,
आज़ाद हुआ था आज वतन,
वो मंज़र फिर से आया है,
अब राष्ट्र पर्व फिर आया है.

इस देश में यमुना गंगा है,
मेरा झंडा ये जो तिरंगा है,
मैंने शान से ये लहराया है,
अब राष्ट्र पर्व फिर आया है.

अपनी धरती अपना भारत,
हरियाली धरा, नीला सागर,
हर मन को ये हर्षाया है,
अब राष्ट्र पर्व फिर आया है,

हर वर्ग मिला हर धर्म चला,
हर हिंदुस्तानी साथ चला,
तब दुश्मन भी थर्राया है,
अब राष्ट्र पर्व फिर आया है,

जब बालक को शिक्षा मिलती,
जब महिला को सम्मान मिले,
तब तब भारत मुस्काया है,
अब राष्ट्र पर्व फिर आया है.

हर कदम बढे, हर कदम चले,
सब स्वच्छ रहें, सब स्वस्थ रहें,
हर मन को ये सच भाया है,
अब राष्ट्र पर्व फिर आया है.

Shrawan Sahu

कौन स्वतन्त्र हैं?

आखिर कौन आजाद यहां?
जो स्वतंत्र दिवस मनाते हैं।
दिखता सत्य सबको मगर,
यूं ही क्यों दिल बहलाते है।

न स्वतंत्र वह अजन्मी बच्ची,
इस भव सागर में आने को।
आ भी गयी तो क्या सहीं?
तकते दरिंदे उन्हें मिटाने को।

क्या स्वतंत्र हर घर की बेटी?
उंची शिक्षा को पाने को।
कितने बैठे दुश्मन देख लो,
सक्रिय है इन्हें सताने को।

आजाद नही है नेंक जवान,
अपनी विचार फैलाने को।
सच बोले झुठ लगता है,
खुद झुठी इस जमाने को।

जनता जैसे गुलाम नेता का,
घुट-घुट जीवन जी रहा।
अपनी ही धरती पर देखो
नित आंसुओं को पी रहा।

कितनी और झुठी तसल्ली?
देते रहेंगे दिल को हम।
अच्छा होता गर होता ऐसा,
खुद स्वतन्त्र हो,रखता दम।

जन गण मन

Sanjay Verma

आओ सब मिलके
जन गण मन गीत गाएँ
स्वतंत्रता कि खुशियाँ को
मिल जुल कर मनाएं
राष्ट्रीय त्योहारों पर
तिरंगे को लहराए
आओं सब मिलके
जन गण मन गीत गाएं
हिन्दू मुस्लिम ,सिख ईसाई
आपस में सब भाई -भाई
भारत माता है
हम सब कि माई
फक्र से हम सब
सर ऊपर उठाएँ
आओं सब मिलके
जन गण मन गीत गाएं
शहीदो को पुष्प चढ़ाएँ
उनके सम्मुख शीश नवाएँ
दिलाई हमें अंग्रेजों से आजादी
दुनिया को हम ये बताएँ
आओं सब मिलके
जन गण मन गीत गाएं
देश के सीमा प्रहरी बन जाएँ
देश कि रक्षा का दायित्व निभाएँ
युवा पीढ़ी को ये मूल मंत्र समझाएँ
आओं सब मिलके
जन गण मन गीत गाएं

Shathi Mukherji

सलाम करे तिरंगे को

****

ये ना सोचो कौन करेगा
साथ तुम्हारे कौन बढ़ेगा।
आओ थामे ड़ोर को
सलांम करे तिरंगे को।।
एकता की करो मिसाल कायम
झूटे अभिमांन को छोड़ो।
ये देश अपना है
रोज नया एक अभिंयान छेड़ो।।
अपराध जो फैला जगत में
चूड़िया जो टूट रही।
नारी अवला सी रो रही
अस्मत जो बिखर रही।।
फैले अपराधी जड़ो को
हिम्मत की तलवार से
काट गिराओ।
नारी कौम को झांसी बनाएं
शक्ति प्रचंड़ आग जलाए।
देश अपराध से आजाद कराएं।।
आओ देश सशक्त् बनाए
वीरो की ईस भूंमी को ।
जहां बहती प्रेम धाराएं
धरा से ले गंगन तलक।
वतन -परस्ती की शमा जलाए।।
अंखड़ भारत की ईस बसुधा को
जहाँ धर्म ,प्रेम, बिशवास,
आस्था सर्वोपरि।
प्रेम की जहां नदियां बहती
जान तिरंगा,शान तिरंगा,
मन तिरंगा हो जाए।
भूला कर हर नफरत को
वतन-प्रेम एक दीप जलाएं।
आओ एक प्यारा हिन्दुस्तान बनाएं।।

Dr. Sarla Singh

खुशियों का पावन पर्व आया,
आओ मिलकर खुशी मनायें ।
आजादी का पर्व प्यारा इसे ,
हम प्यार से ही मनायें साथी।
पाने को आज का दिन ये ,
न जाने कितनो ने सिर कटाये ।
जीवन किया समर्पित तब ये,
आजादी का पावन पर्व पाया ।
सदियो की गुलामी से हमने ,
सदियों तक लड़कर मुक्ति पाई।
ना जाने कितनी जान इसपर ,
न्यौछावर हुआ है मेरे साथी ।
ये आजादी का पर्व देशवालों,
उत्सव तक ही ना सिमट जाये ।
आजादी का पावन पर्व साथी ,
कुछ नये ढंग से चलो मनाये ।
आजादी को ऐसे मनाये की ,
सब को ही खुशी मिल जाये ।
बालमजदूरी से आजादी प्यारे,
छोटे बच्चों को मिल जाये ।
विषम गरीबी से आजादी ,
सारे गरीबों को मिल जाये ।

संकीर्ण विचारों से आजादी,
ऐसे सभी लोगों को मिल जाये ।
नफरत के मारे बेचारे बन्दो में भी ,
प्रेम की इक ज्योति भी जल जाये ।
ना हिन्दू ना मुसलमान मेरे साथी,
हम सब केवल भारतीय बन जायें।
आओ आजादी का पर्व पावन ,
हम सब मिलकर चलो मनायें ।
वन्दे मातरम् की ध्वनि आज ,
पूरे विश्व में गर्व से छा जाये ।
हम सब केवल भारतीय बन जायें ।
चलो आजादी का पर्व ये मनायें ।

Smt. Vinod Sharma

स्वतन्त्र भारत के बीते वर्ष उजास ,
अण्डज सभा में भी छाया था उल्लास ।
पर आज एक सुआ था अधिक उदास ,
गवां कर अपने स्वरों की मिठास
विचारो की लड़ियों में उलझा था वो
प्रश्नो की कड़ियों से सुलझता सा वो
की फुदकती मैना ने आ तंग किया ,
तंद्रा को उसकी यों भंग किया.....
मीठू भाई , छोड़े सारे विलास ,
जयंती समारोह से हो कर उदास ,
तनहाई की चादर ओढ़े हुए ,
नीरवता से नाता जोड़े हुए
अँधेरे में क्यों बैठे हो शांत ?,
अनमना सा तोता बोला.....
मेरा देश महान है
सम्पदाओं की खान है ,
मै इसका आदर करता हूँ ,
परन्तु लूटेरों से डरता हूँ ,
समारोह जैसे चोचलों से
नफरत करता हूँ ।

क्योंकि ये लुटेरे ऐसे ही
अवसरों की ताक में रहते हैं ,
इसी बहाने तिजोरियां भरते हैं,
नारे लगाते हैं ,रैलियां मनाते हैं ,
जनता को बहका कर
उल्लू बनाते हैं ।
धीरे धीरे ये देश को
खोखला बना रहे हैं ,
हर भारतवासी को
कर्जे ले जाल में बांध रहे हैं
देश के स्नायुतंत्र में घोटालों का
इंजेक्शन दे रहे हैं।
मुझे भारतमाता
रोती सी प्रतीत होती है
अपने नालायक बेटों पर
किस्मत ठोकती सी
दिखाई देती है ।
अब तुम ही बताओ
मैं कैसे स्वर्ण जयंती मनाउँ ?
मै कैसे मीठे स्वर में गाना गाऊँ ?

हमने ख़ुद को आज़ाद किया.....

VedPal Singh

भूख लगी आज़ादी की तो हमने ख़ुद को आज़ाद किया,
रक्तपात से अलग हमने अहिंसा का शस्त्र ईजाद किया।

साथ साथ में बलि भी दी आज़ादी के बहुत दीवानों की,
इस देश पर मिटने वालों की नौजवानों की मस्तानों की।
लेकिन फिर अपनी तरफ़ से ना कोई बड़ा फ़साद किया,
रक्तपात से अलग हमने अहिंसा का शस्त्र ईजाद किया।

सबक़ दिया हमने दुनिया को अहिंसा परक अनुरोध का,
अनशन का सत्याग्रह का और शांत सहिष्णु विरोध का।
हम पिटे छिते गोली खायी पर मन को ना नाशाद किया,
रक्तपात से अलग हमने अहिंसा का शस्त्र ईजाद किया।

आंदोलन की राह पकड़कर हम शांत भाव से चलते रहे,
तपती राह पर भी बढ़ते ही रहे चाहे पैर हमारे जलते रहे।
मंजिल जबतक ना मिली एक क्षण भी ना बर्बाद किया,
रक्तपात से अलग हमने अहिंसा का शस्त्र ईजाद किया।

आख़िर घुटने टेक गया और ज़ालिम हमसे मज़बूर हुआ,
हमें करना पड़ा आज़ाद उसका दम्भ भी चकनाचूर हुआ।
आज़ादी लेकर सफल हुए हमने आज़ादी का नाद किया,
रक्तपात से अलग हमने अहिंसा का शस्त्र ईजाद किया।

आज हमारा सब कुछ अपना हम किसी के गुलाम नहीं,
सर ऊँचा कर बढ़ते रहेंगे अब रुकने का कोई काम नहीं।
तोड़ कर गुलामी की ज़ंजीरें स्वतंत्र भारत आबाद किया,
रक्तपात से अलग हमने अहिंसा का शस्त्र ईजाद किया।

Vinita Rahurikar

सैनिकों के लिए.....

नहीं जानती थी तब तक
क्या होती है भूख
उस दिन सुना पहली बार
आतंकवादियों का पीछा करते
पन्द्रह दिनों तक
जंगलों की खाक छानते वो सैनिक
साथ लाया राशन खत्म हो जाने पर
दो घूँट पानी पीकर बहला लेते
अपनी भूख को,
आंतों की कुलबुलाहट को
बेल्ट से कसकर अनुशासन में रखते
पाँच दिनों के भूखे सैनिक
रात के ढाई बजे सड़क किनारे
भुट्टे का खेत देखकर
रोक नहीं पाये अपने आपको
पास ही अंगार सुलग रहे थे
भुट्टे भूनकर खा गए
ईश्वर का वरदान समझकर।
घनघोर काली रात में
थकान से चूर
दाना पेट में जाते ही
अंगार के पास, चबूतरे पर सो गए

सुबह जब आँख खुली
तो सन्न रह गए
रात भूख और थकन के मारे
कुछ सोच नहीं पाये थे
इतनी रात में किसने
अंगार सुलगा रखे थे।
वो किसी कि चिता थी
जो देर शाम को जली होगी।
बताते हुए जवान तो हंस दिया
लेकिन मैं कांप गयी अंदर तक
जब सुनी सैकड़ों ऐसी कहानियाँ
उनके भूखे रहने की।
हमारी सुरक्षा के लिए
अपनी जान न्योछावर करते
भूख को धोखा देते
जंगलों की खाक छानते, ये सैनिक
जिन्हें देखा नहीं कभी हमने।
थाली भर खाना खाते हुए
कभी नहीं सोचते हम
उनकी भूख के बारे में।।

सच्ची श्रद्धांजलि है

Yogendra maurya

लालकिले पर झंडा फहरे ,दिल्ली जश्न मनाती है
स्वतन्त्रता है पर्व राष्ट्रीय,अखंड ज्योति जलाती है

पूरा भारत गूँज रहा ,जय भारत माँ की नारों से
राजपथ पर आज कोलाहल,वीरों की जयकारों से

विविध संस्कृति को दर्शाती,देखो निकली झांकी है
अपराधी को सबक सिखाती,सम्मानित हर खाकी है

आजादी की तस्वीरों को,देख तन-मन झंकृत है
माँ भारती की शीश पर,सुनहरा मुकुट अलंकृत है

राजगुरु,सुखदेव,भगत सिंह,अपना जान गवाएं थे
अशफाकउल्ला और बिस्मिल,गोरों को दहलाये थे

मातृभूमि की आजादी,जिनको जान से प्यारी थी
मरदानी वह लक्ष्मी बाई,अंग्रेजों पर भारी थी

गांधीजी की सत्य-अहिंसा,पर हमको अभिमान है
धन-धान्य से भरी वसुंधरा,मेरा देश महान है

दिन है पावन आजादी का,मिलकर इसे मनायेंगे
भेदभाव की बात भुलाकर, सबको गले लगायेंगे

भारत के वीर शहीदों तुझपर,अर्पित पुष्पांजलि है
आजादी को कायम रखना ही,सच्ची श्रद्धांजलि है